CHAPTER -2
NDIAN SCULPTURE

"More than architecture and paintings, sculpture has been the form of art employed in the service of religion in India. Sculptures are also created for many secular purposes. But religious practices have played perhaps the most significant role in the development, which is recognized as one of the world's great sculptural traditious." —**Janice Leoshko**

2 भारतीय मूर्तिकला (INDIAN SCULPTURE)

भारतीय मूर्तिकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत के चरम रूप को अभिव्यक्त करती है। इसे यदि भारतीय संस्कृति का सर्वांग प्रस्तुतिकरण कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय मूर्तिकारों को भारतीय संस्कृति के चारों पुरुषार्थों का मूर्त रूप देने में अद्वितीय सफलता प्राप्त हुई। जितनी पूर्णता, सहजता एवं संवेदनशीलता के साथ उन्होंने भावों को मूर्तियों में उकेरा है उसकी अन्यत्र कोई उदाहरण नहीं मिलती। भारतीय मूर्तिकला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसका आरंभ मानव सभ्यता के विकास क्रम से जुड़ा हुआ है। मूर्तिकला से अभिप्राय उन मूर्तियों से है जो मानव, देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों एवं पेड़-पौधों आदि से संबंधित हैं। जिन मूर्तियों की मंदिरों में उपासना की जाती है उन्हें प्रतिमा कहा जाता है। इन मूर्तियों को मूर्तिकार द्वारा किसी धातु-सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, पीतल, अष्टधातु, काँच, सख्त एवं मुलायम पत्थर, कच्ची अथवा पकाई गई मिट्टी, मोम, हाथी दाँत, शंख, सीप, सींग एवं लकड़ी आदि से हाथ से अथवा औज़ार द्वारा निर्मित किया जाता है। यहाँ हम भारतीय मूर्तिकला के विकास के इतिहास का विभिन्न चरणों में संक्षिप्त अध्ययन करेंगे।

1. हड़प्पा मूर्तिकला (Harappan Sculpture)

हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने मूर्तिकला के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति की थी। उन्होंने पत्थर, काँसे एवं मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने में निपुणता प्राप्त की थी। निस्संदेह इन्हें कला की दृष्टि से उच्च कोटि का कहा जा सकता है—

1. पत्थर की मूर्तियाँ (Stone Statues)—हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने पत्थर की अनेक मूर्तियों का निर्माण किया। इनमें दो मूर्तियाँ-दाढ़ी वाला पुरुष एवं पुरुष धड़-विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं।

(*i*) **दाढ़ी वाला पुरुष (Bearded Man)**—दाढ़ी वाला पुरुष नामक मूर्ति मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है। इसे पुरोहित राजा की मूर्ति के नाम से भी जाना जाता है। यह मूर्ति अत्यंत प्रभावशाली है। इसे सफेद चूने के पत्थर से निर्मित किया गया है। यह मूर्ति 17.5 सैंटीमीटर ऊँची है। इसकी दाढ़ी विशेष रूप से संवारी गई है। इसकी मूँछें नहीं हैं। इसके केश पीछे की ओर फीते से बाँधे गए हैं। मस्तक पर गोल अलंकरण है। इसकी आँखें बड़ी पर अर्ध-खुली हैं। उसकी दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर टिकी हुई है अथवा ध्यान मुद्रा में है। इसकी नासिका सुंदर बनी हुई है। इसके होंठ कुछ आगे निकले हुए हैं जिनके बीच की रेखा को कुछ गहरा बनाया गया है। इसके कान सीप जैसे दिखाई देते हैं एवं उनके बीच में छेद है। बालों को मध्य में माँग के द्वारा दो हिस्सों में बाँटा गया है। इसके सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ फीता बँधा हुआ दिखाया गया है। इसकी दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है। इसकी गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह एक हार पहने हुए है। इसे एक शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। इस शॉल को बाएँ कंधे के ऊपर से और दाहिनी भुजा के नीचे से पहना गया है। इस पर तीन पत्तों का नमूना बना हुआ है। इस मूर्ति का निम्न भाग नष्ट हो चुका है।

(*ii*) **पुरुष धड़ (Male Torso)**—पुरुष धड़ नामक मूर्ति हमें हड़प्पा से प्राप्त हुई है। यह लाल पत्थर से बनी हुई है। यह मूर्ति 9 सैंटीमीटर ऊँची है। यह नग्न मूर्ति है। इस मूर्ति के हाथ, पैर एवं सिर सभी टूटे हुए हैं। इसमें सिर और भुजाएँ जोड़ने के लिए गर्दन और कंधों में छिद्र बने हुए हैं। इससे संकेत मिलता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग ऐसी मूर्तियाँ बनाना जानते थे जिनके सिर एवं हाथों को मोड़ा जा सके। धड़ के सामने वाले हिस्से को एक विशेष मुद्रा में सोच समझकर बनाया गया है। इसकी छाती एवं पिछले हिस्से को बहुत कुशलता के साथ तराशा गया है। इसका पैर कुछ बाहर निकला हुआ है। इस मूर्ति को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता के कलाकारों को शारीरिक रचना का गहन ज्ञान था। इस मूर्ति का निर्माण समय 2500 से 2000 ई० पू० के मध्य माना जाता है। यह मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में सुरक्षित है।

2. धातु मूर्तियाँ (Metal Statues)—हड़प्पा सभ्यता के लोग काँसे की ढलाई बड़े पैमाने पर करते थे। वह इस काम में बहुत प्रवीण थे। अत: उन्होंने बड़े पैमाने पर काँसे की मूर्तियाँ बनाईं। इनमें मानव एवं जानवर दोनों ही सम्मिलित थे।

(*i*) **नर्तकी (Dancing Girl)**—हड़प्पा काल की धातु की मूर्तियों में से मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे की नर्तकी की मूर्ति सर्वाधिक विख्यात है। यह हड़प्पा सभ्यता की प्राप्त होने वाली सबसे अद्वितीय मूर्ति है। इसकी ऊँचाई 11.5 सैंटीमीटर है। यह मूर्ति लगभग निर्वस्त्र है। इसकी त्वचा का रंग सांवला दिखाया गया है। इसके लंबे केश सिर के पीछे एक जूड़े के रूप में गुंथे हुए हैं। इस मूर्ति में नर्तकी ने अपना दायाँ हाथ कमर पर रखा हुआ है। इस भुजा के ऊपरी भाग में बाजूबंद और निम्न भाग में कड़ा पहना हुआ है। उसका बायाँ हाथ परंपरागत नृत्य मुद्राओं में उसके घुटने के कुछ ऊपर बाईं जंघा पर टिका हुआ है। इस भुजा में उसने अनेक चूड़ियाँ पहनी हुई हैं। भुजाएँ असामान्य रूप से लंबी दिखाई गई हैं। उसने गले में कौड़ियों से बना हुआ एक हार पहना हुआ है। इससे उसकी शोभा को चार चाँद लग गए हैं। इसके सिर के बाल बहुत घुंघराले दर्शाए गए हैं। उसका लड़के जैसा चेहरा यह दर्शाता है कि हड़प्पा सभ्यता के कलाकार चेहरों में उन सूक्ष्म बिंदुओं को पकड़ पाने में असमर्थ थे जो लड़के एवं लड़की के अंतर को स्पष्ट करते हैं। इस मूर्ति का निर्माण 2500 ई० पू० के लगभग किया गया था। यह मूर्ति देखने में बिल्कुल सजीव लगती है। वास्तव में इस मूर्ति ने जिस गतिशील मुद्रा को प्रदर्शित किया है वह बेजोड़ है। प्रसिद्ध लेखक **रुस्तम जे० मेहता** के शब्दों में,

"यह कृति अत्यंत सुंदर है।"[1]

एक अन्य प्रसिद्ध लेखक **डॉक्टर आर० एस० त्रिपाठी** के अनुसार,

"इस (नर्तकी की मूर्ति) ने जिस गतिशील मुद्रा को प्रदर्शित किया है। उसकी तुलना में कोई अन्य कृति ऐतिहासिक कालीन कला के क्षेत्र में भी नहीं है।"[2]

(*ii*) **वृषभ (Bull)**—हड़प्पा सभ्यता काल की धातु की मूर्तियों में दूसरी उत्कृष्ट मूर्ति वृषभ (भैंसे) की है। यह मूर्ति मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है। उसका शरीर भारी-भरकम बनाया गया है। उसकी मुद्रा आक्रमक है। वह गुस्से में दिखाई देता है। उसने अपना सिर दाईं ओर घुमाया हुआ है। उसके शारीरिक हाव-भाव को देखते हुए यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि हड़प्पा काल में शिल्पकारों को जानवरों की संरचना का गहन ज्ञान था।

---

1. "It is work of great beauty." **Rustam J. Mehta, Masterpieces of Indian Sculpture (Bombay : 1976) p. 37.**

2. "Its pose is so full of movement that there is hardly any parallel to it even among the sculptures of the historic period." **Dr. R.S. Tripathi, History of Ancient India (New Delhi : 1987) p. 21.**

3. मृण्मूर्तियाँ (Terracotta)—हड़प्पा काल में सर्वाधिक पक्की मिट्टी (टेराकोटा) से निर्मित मूर्तियों का निर्माण किया गया था। लेकिन ये मूर्तियाँ पत्थर एवं काँसे की मूर्तियों जितनी बढ़िया नहीं थीं। इन मूर्तियों में सर्वाधिक मातृदेवी (Mother Goddess) की मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ प्राय: नग्न हैं। उन्होंने केवल एक छोटा-सा कमरबंद (girdle) पहना हुआ है। सिर पर पंखे जैसा आवरण है। केशों का विशेष ध्यान रखा गया है। उन्हें कई प्रकार के गहनों से लादा गया है। कुछ स्थलों से प्राप्त मूर्तियों की माँग में लाल रंग भरा गया है। कुछ मूर्तियों की गोद में बच्चा दर्शाया गया है। कुछ सामान्य नारियों की मूर्तियाँ मिली हैं जिन्हें गृहकार्य करते हुए दर्शाया गया है। इनके अतिरिक्त कुछ दाड़ी-मूँछ वाले पुरुषों की छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाई गई हैं। इनके बाल गुँथे हुए हैं। ये एकदम सीधे खड़े हुए हैं। इनकी भुजाएँ शरीर के समानांतर नीचे की ओर लटकी हुई हैं। निस्संदेह ये किसी देवता की मूर्तियाँ हैं। हड़प्पा काल की मानव मूर्तियों से कहीं अधिक पशुओं एवं पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। इनमें कूबड़दार बैल, हाथी, गैंडा, बाघ, भालू, खरगोश आदि की आकृतियाँ प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त मिट्टी की पहियेदार गाड़ियाँ, छकड़े, सीटियाँ, खेलने के पासे एवं धागे वाले खिलौने मिले हैं। निस्संदेह इन मूर्तियों एवं खिलौनों के निर्माण में हड़प्पा सभ्यता के कलाकारों ने बड़ी सूझ का परिचय दिया है। प्रसिद्ध इतिहासकार **डॉक्टर बी०बी० लाल** के शब्दों में,

"मिट्टी की मूर्तियाँ-मानव एवं पशु-उत्कृष्टता, विभिन्नता तथा सूझ का परिचायक है।"[3]

2. मौर्य मूर्तिकला
(Mauryan Sculpture)

मौर्य काल एवं विशेष रूप से अशोक के शासनकाल में मूर्तिकला के क्षेत्र में अद्वितीय विकास हुआ। अशोक के अनेक स्तंभों पर हमें उच्च कोटि की मूर्तिकला के दर्शन होते हैं। इनके अतिरिक्त हमें मौर्य काल की चुनार के पत्थर से निर्मित पशुओं, यक्ष, यक्षणियों तथा मानवों की अनेक मूर्तियाँ हमें प्राप्त हुई हैं। इन मूर्तियों का निर्माण अत्यंत सुंदर ढंग से हुआ है। इनमें भद्दापन नाममात्र का नहीं है। इनमें सर्वत्र बारीकी तथा हाथ की सफ़ाई समान रूप में दृष्टिगोचर होती है। मौर्य काल में दो प्रकार की मूर्तिकला प्रफुल्लित हुई। एक को दरबारी अथवा राजकीय मूर्तिकला कहा जाता था तथा दूसरी को लोक मूर्तिकला कहा जाता था। दरबारी मूर्तिकला में वो मूर्तियाँ सम्मिलित हैं जो राजकीय संरक्षण में निर्मित की गई थीं। इनमें महाराजा अशोक द्वारा स्तंभों पर बनाई गई पशुओं की मूर्तियाँ एवं धौली में बनाई गई हाथी की मूर्ति सम्मिलित है। लोक मूर्तिकला का निर्माण व्यापारियों एवं उच्च धनी व्यक्तियों द्वारा करवाया गया। इनमें वे मूर्तियाँ सम्मिलित थीं जो लोक अभिरुचि से संबंधित थीं। मौर्यकाल की प्रमुख मूर्तियों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है—

1. सिंह शीर्ष सारनाथ (Lion Capital Sarnath)—सारनाथ का स्तंभ जिसके ऊपर सिंह (शेर) का शीर्ष है, मौर्य स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। सारनाथ उत्तर प्रदेश के वाराणसी ज़िले से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे महाराजा अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ई०पू० में महात्मा बुद्ध द्वारा धम्मचक्र प्रवर्तन अथवा प्रथम उपदेश देने की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में बनवाया गया था। सिंह का यह शीर्ष 2.31 मीटर ऊँचा है। इस सिंह शीर्ष पर बनी एक वेदी पर चार सिंह एक-दूसरे से पीठ जोड़कर बैठाए गए हैं। सिंहों की ये चारों आकृतियाँ अत्यं प्रभावशाली एवं ठोस हैं। इन चारों सिंहों को दहाड़ते हुए दर्शाया गया है। सिंहों के चेहरे का पेशी विन्यास (facia musculature) बहुत सुदृढ़ बनाया गया है। होठों की विपयस्त रेखाएँ (inversed lines) और उनके फैलाव द प्रभाव यह दर्शाता है कि कलाकार की अपनी सूक्ष्म, दृष्टि सिंह का स्वाभाविक चित्रण करने में सफल रही है। ऐ

3. "The terracotta figurines human as well as animal show vigour, variety and ingenuity **Dr. B.B. Lal, The Indus Civilization** cited in, A Cultural History of India, ed. by A.L. Basha

प्रतीत होता है कि मानों सिंहों ने अपनी साँस को भीतर रोक रखा है। अयाल (mane) ... उनमें उस समय की प्रचलित परंपराओं का पालन किया गया है। सिंहों के शरीर के भारी बोझ को पैरों की ... हुई माँसपेशियों के माध्यम से बखूबी दर्शाया गया है। वृत्ताकार शीर्षफलक (circular abacus) पर चार चक्र ... हुए हैं। प्रत्येक चक्र में 24 स्पोक्स हैं। प्रत्येक चक्र के साथ एक साँड, एक घोड़ा, एक हाथी एवं एक शेर की आकृतियाँ, सुंदरता से उकेरी गई हैं। इन सभी पशुओं को जिस गतिमान मुद्रा में उकेरा गया है उससे मौर्यकाल के मूर्तिकारों के उत्कृष्ट कौशल की साफ़ झलक दिखाई देती है। यह शीर्षफलक एक उल्टे कमल की आकृति पर टिका हुआ दिखाई देता है। कमल पुष्प की प्रत्येक पंखुड़ी को उसकी सघनता को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। सिंह शीर्ष के केवल ऊपरी हिस्से को अब स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर वी०ए० स्मिथ के शब्दों में,

''संसार के किसी भी देश में इस प्राचीन पशु मूर्तिकला में सर्वश्रेष्ठ अथवा उसकी बराबरी जैसी सुंदर कला की कोई अन्य उदाहरण नहीं मिलती।''[4]

एक अन्य प्रसिद्ध लेखक **वी० एस० अग्रवाल** के अनुसार,

''सारानाथ का सिंह शीर्ष मौर्य कला की परिपूर्णतया दर्शाता है तथा यह प्रमाणित करता है कि मौर्य काल के पत्थर तराशने वालों ने प्रवीणता प्राप्त कर ली थी।''[5]

2. लौरिया नंदनगढ़ का सिंह (Lion of Lauriya Nadangarh)—लौरिया नंदनगढ़ का सिंह मौर्य मूर्तिकला का एक अन्य विशिष्ट उदाहरण है। लौरिया नंदनगढ़ का स्तंभ 9.8 मीटर ऊँचा है। इसके शीर्ष पर एक सिंह बना हुआ है। वह अपनी गर्दन उठाए आगे के पैरों पर खड़ा है। सिंह की अयाल (धारियाँ) वास्तविक प्रतीत होती हैं। इससे मूर्ति में गतिशीलता का आभास मिलता है। सिंह जिस वेदी पर बैठा है उसके नीचे एक घंटे के आकार का उल्टा कमल बना है। यहाँ भी कमल पुष्प की प्रत्येक पंखुड़ी को बखूबी उकेरा गया है। इसके वृत्ताकार शीर्षफलक को उड़ते हुए हंसों से सजाया गया है।

3. धौली में चट्टान से काटकर बनाया गया हाथी (Rock-cut Elephant of Dhauli)—धौली ओडिशा के भुवनेश्वर शहर से 8 किलोमीटर की दूरी पर दया नदी के किनारे पर स्थित है। धौली को कलिंग युद्ध का स्थल माना जाता है। यहाँ महाराजा अशोक ने चट्टान से काटकर एक विशाल हाथी की मूर्ति बनवाई थी। इसे कलिंग विजय की स्मृति में बनाया गया था। हाथी का संपूर्ण शरीर बलिष्ठ एवं समानुपातिक है। देखने में ऐसा जान पड़ता है कि हाथी चट्टान के अंदर से बाहर आ रहा है। निस्संदेह इसे मौर्य मूर्तिकला की एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

4. मणिभद्र यक्ष : परखम (Manibhadra Yaksha : Perkham)—मणिभद्र यक्ष को प्राचीनकाल भारत का एक लोकप्रिय देवता माना जाता था। इस यक्ष की एक विशालकाय मूर्ति मथुरा से 22.5 किलोमीटर दूर स्थित परखम नामक गाँव से प्राप्त हुई है। यह मूर्ति 7 फीट ऊँची है। इसका मुख सुंदर है एवं नेत्र अर्ध खुले हैं। इसके केशों का विन्यास देखते ही बनता है। इसका शरीर गठीला दर्शाया गया है। इसके कानों में बड़े कुंडल एवं गले में भारी कंठा है। यह लाल बलुआ पत्थर से बनी है। इस पर मौर्य काल की चमकदार पॉलिश की गई है। निस्संदेह इसे मौर्य काल की एक महान् कलाकृति कहा जा सकता है। वर्तमान में यह मथुरा संग्रहालय में संरक्षित है।

5. दीदारगंज यक्षिणी (Didarganj Yakshini)—पटना के दीदारगंज से मिली चँवर धारिणी यक्षिणी की मूर्ति को मौर्य काल की सबसे बेहतरीन मूर्तियों में से एक माना जाता है। यक्षिणी को हिंदू, बौद्ध एवं जैन धर्मों में

4. "It would be difficult to find in any country an example of ancient animal sculpture superior or even equal to this beautiful work of art." **Dr. V.A. Smith,** Asoka (New Delhi : 1957) p.72.

5. "The Sarnath lion capital represents the perfection of Mauryan art and testify to the undisputed mastery of the Mauryan stone cutters of technical execution." **V.S. Agrawala, Studies in Indian Art** (Varanasi : 1965) p.67.

प्रजनन क्षमता का प्रतीक माना जाता है। दीदारगंज यक्षिणी का निर्माण मौर्य काल में तीसरी शताब्दी ई० पू० में किया गया था। यह मूर्ति 5.4 फीट ऊँची है। इसका निर्माण बलुआ पत्थर से किया गया है। इसका अंग विन्यास संतुलित एवं समानुपातिक है। यक्षिणी ने दाहिने हाथ में चँवर को पकड़ा हुआ है। इस मूर्ति का दूसरा हाथ नष्ट हो चुका है। इस मूर्ति की गोल गठीली काया बनाने में मूर्तिकार की निपुणता स्पष्ट झलकती है। उसका चेहरा अति सुंदर है। उसके उरोजों को भारी बनाया गया है। उसके केश पीछे की ओर बँधे हैं। उसने गले में एक लंबा हार पहना हुआ है जो पेट तक लटका हुआ है। यक्षिणी के अधोवस्त्र को बड़ी सावधानी से बनाया गया है। टाँगों पर पोशाक का हर मोड़ बाहर निकला हुआ दिखाया गया है। यह कुछ पारदर्शी प्रभाव उत्पन्न करता है। पोशाक की मध्यवर्ती पट्टी ऊपर से नीचे तक उसकी टाँगों तक गिर रही है। उसने पैरों में भारी आभूषण पहने हुए हैं। मूर्ति पर चमकदार पॉलिश की गई है। इस मूर्ति की गणना विश्व की प्रसिद्ध प्राचीन मूर्तिकलाओं में कलात्मक, रचनात्मक एवं तकनीक की दृष्टि से उच्च कोटि के कारण की जाती है।

3. कुषाण मूर्तिकला
(Kushana Sculpture)

कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध शासक कनिष्क था। कनिष्क एक महान् कला प्रेमी था। अतः उसके शासनकाल में भारतीय कला ने एक नए युग में प्रवेश किया। गाँधार कला तथा मथुरा कला इस काल की दो उल्लेखनीय शैलियाँ थीं। इन्होंने महात्मा बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों आदि की बहुत ही मनोहर मूर्तियों का निर्माण किया।

I. गाँधार कला
(Gandhara Art)

भारतीय कला के इतिहास में गाँधार कला को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गाँधार पंजाब के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। इस कला का विकास तो चाहे पहले से आरंभ हो चुका था, परंतु कुषाण काल में यह अपने विकास की चरम सीमा तक पहुँच गई थी। इस कला के विषय, विचार और भाव तो भारतीय थे, परंतु इसकी शैली मूल रूप से यूनानी थी। इसी कारण यह कला **भारतीय-यूनानी कला** अथवा **यूनानी-बौद्ध कला** के नाम से विख्यात हुई। इस कला का प्रमुख विषय महात्मा बुद्ध तथा उसके जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं को मूर्तियों के द्वारा प्रकट करना था। महात्मा बुद्ध के अतिरिक्त बोधिसत्त्वों और कुछ मूर्तियाँ हिंदू देवताओं की भी बनाई गईं। गाँधार शैली के शिल्पकारों ने ये मूर्तियाँ इतनी सुंदर बनाई हैं कि ये देखने में बिल्कुल सजीव लगती हैं। इनमें अधिकाँश मूर्तियाँ **भूरे पत्थर** की बनाई गई हैं, परंतु कुछ मूर्तियाँ **काले स्लेटी पत्थर** से भी बनी हुई हैं। इस कला की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(*i*) गाँधार शिल्पकारों ने प्रथम बार महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ बनाईं। इससे पूर्व महात्मा बुद्ध के अस्तित्व को चिह्नों जैसे वट वृक्ष तथा छतरी इत्यादि के रूप में प्रस्तुत किया जाता था।

(*ii*) इस शैली के शिल्पकारों ने वास्तविकता को दर्शाने के लिए शरीर की नाड़ियों, हड्डियों, पट्ठों इत्यादि को बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है।

(*iii*) इस शैली के द्वारा बनाई गई मूर्तियों में महात्मा बुद्ध को यूनानी देवता अपोलो की तरह दिखाने का प्रयास किया गया है।

(*iv*) गाँधार कला की मूर्तियों के सिरों के बाल घुँघराले दर्शाए गए हैं तथा मूँछों की तरफ भी विशेष ध्यान प्रदान किया गया है।

(*v*) मूर्तियों को सुंदर बनाने के उद्देश्य से उन्हें वस्त्र एवं आभूषणों से सुसज्जित किया गया है।

(*vi*) मूर्तियों में बना प्रभाचक्र (Halo) अलंकरण से रहित है।

(vii) गाँधार कला शैली में पॉलिश और सफ़ाई की ओर बहुत ध्यान प्रदान ...

(viii) इस शैली के शिल्पकारों ने स्त्रियों की मूर्तियों को कोई महत्त्व न दिया।

(ix) इस शैली के शिल्पकारों ने किसी प्रकार की भी कामोत्तेजक मूर्तियाँ नहीं बनाईं।

II. मथुरा कला
(Mathura Art)

कुषाण काल में विकसित हुई मथुरा कला भी सुविख्यात थी। आरंभ में इस पर गाँधार कला का प्रभाव अवश्य पड़ा, परंतु धीरे-धीरे इसने पूर्णतः भारतीय रूप अपना लिया था। मथुरा के शिल्पकारों ने न केवल महात्मा बुद्ध, बोधिसत्वों, हिंदू देवताओं, जैन तीर्थंकरों, अपितु यक्ष और यक्षणियों की अति सुंदर मूर्तियाँ बनाईं। इनके अतिरिक्त उन्होंने सर्वप्रथम कुषाण शासकों की वैभवशाली मूर्तियाँ भी बनाईं। उनकी ये मूर्तियाँ लाल रंग के पत्थर से बनी होती थीं जोकि फतेहपुर सीकरी से प्राप्त किया जाता था। मथुरा शिल्पकारों ने स्तूपों के इर्द-गिर्द बहुत मनमोहक स्तंभ और जंगले बनाए। इस काल की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) मथुरा कला के शिल्पकारों ने महात्मा बुद्ध की भारी शरीर वाली मूर्तियाँ बनाईं।

(ii) महात्मा बुद्ध को सदैव कमल आसन पर बैठे दिखाया गया है।

(iii) महात्मा बुद्ध की मूर्तियों में बना प्रभाचक्र पूर्ण तौर से अलंकृत है।

(iv) इस कला शैली में महात्मा बुद्ध की बनी मूर्तियों के सिर पर न तो बाल दिखाए गए हैं तथा न ही मूँछें बनाई गई हैं।

(v) इस कला शैली में महात्मा बुद्ध की जो मूर्तियाँ बनाई गई थीं, उनका दायाँ हाथ अभयमुद्रा (Abhaymudra) को दर्शाते हुए और बायाँ हाथ जाँघ से लगा हुआ दिखाया गया है।

(vi) जहाँ गाँधार कला में महात्मा बुद्ध का दायाँ कंधा प्रायः नग्न दिखाया गया है, वहीं पर मथुरा कला में उसे वस्त्र से ढका हुआ दिखाया गया है।

(vii) मथुरा शिल्पकारों ने जैन तीर्थंकरों की जो मूर्तियाँ बनाईं, वो सभी नग्न थीं, जबकि महात्मा बुद्ध की बहुत-सी मूर्तियों को वस्त्र पहने दिखाया गया है।

4. गुप्त मूर्तिकला
(Gupta Sculpture)

गुप्त काल को भारतीय मूर्तिकला के इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है। इस काल में मूर्तिकला के क्षेत्र में इतनी प्रगति हुई कि इसने कुषाण काल की गाँधार कला को भी पछाड़ दिया। इस काल में पूर्णतः भारतीय विधि से मूर्तियाँ बनाई गईं। इस काल में नग्न मूर्तियाँ बनानी छोड़ दी गईं और उन्हें पारदर्शी कपड़े पहनाए गए। इन मूर्तियों के आंतरिक एवं आध्यात्मिक भावों को अति सुंदर ढंग से दर्शाया गया था। मूर्तियों के प्रभामंडल को अलंकृत किया गया। भावों को दर्शाने के लिए विभिन्न मुद्राओं का सहारा लिया गया है। इन मूर्तियों के मुख पर शाँति, दया एवं करुणा की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। गुप्त काल में पत्थर, धातु एवं मिट्टी की मूर्तियाँ निर्मित की गईं। सारनाथ, मथुरा एवं पाटलिपुत्र गुप्त काल के प्रसिद्ध मूर्तिकला केंद्र थे। गुप्त काल में सर्वाधिक महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ बनाई गईं। इनमें से **मथुरा** में प्राप्त महात्मा बुद्ध के खड़े हुए की मूर्ति और **सारनाथ** में प्राप्त महात्मा बुद्ध के बैठे हुए की मूर्ति अपनी उत्तम कला के कारण सर्वाधिक प्रशंसनीय है। **रुस्तम जे० मेहता** के अनुसार, **"साम्राज्यवादी गुप्त काल में मथुरा एवं सारनाथ में बुद्ध की मूर्तिकला अपनी उस चरम शिखर पर पहुँच गई थी जिसे प्राप्त करने के लिए कुषाण कलाकार प्रयास करते रहे थे।"**[6]

---

6. "The Buddha image reached its highest peak of perfection in the period of the Imperial Guptas, both at Mathura and at Sarnath the final culmination of what the Kushana artists were striving to achieve." **Rustam J. Mehta,** op. cit., p.13.

महात्मा बुद्ध के अतिरिक्त गुप्त काल में बोधिसत्वों, हिंदू देवी-देवताओं—विष्णु, कृष्ण, शिव, सूर्य, कार्तिकेय तथा दुर्गा एवं जैन तीर्थंकरों से संबंधित उत्कृष्ट मूर्तियों का निर्माण किया गया। वास्तव में गुप्त काल की निर्मित मूर्तियों को देख कर ऐसा लगता है जैसे कलाकारों ने उनमें प्राण डाल दिए हों। गुप्तकालीन मूर्तिकला ने न केवल आने वाले समय में भारतीय मूर्तिकला अपितु दक्षिण-पूर्वी एशिया की मूर्तिकला पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

आरंभिक मध्य काल भारत के मूर्तिकला स्कूल (Sculpture Schools of Early Medieval India)

आरंभिक मध्य काल में मूर्तिकला शैली के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। इस काल में मूर्तिकला ने अद्वितीय प्रगति की। इसका कारण यह था कि इस काल में भारत के विभिन्न भागों में हिंदू, जैन एवं बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक भव्य मंदिरों, विहारों एवं गुफाओं आदि का निर्माण किया गया। इनमें अनेक देवी-देवताओं से संबंधित विशाल एवं अति सुंदर मूर्तियों का निर्माण किया गया। इस काल में चोल, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पाल, पल्लव एवं गुर्जर-प्रतिहार आदि शासकों ने मूर्ति कला के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है—

1. चोल मूर्तिकला (Chola Sculpture)—चोल विशेषत: प्राँतक प्रथम, राजराज प्रथम एवं राजेंद्र प्रथम ने मूर्ति कलाकारों को अपना संरक्षण प्रदान किया। चोल शासकों द्वारा बनाए गए तंजौर एवं गंगईकोंडचोलपुरम् नामक मंदिरों में अनेक देवी-देवताओं, राजा एवं रानियों की पत्थर एवं धातुओं की अति सुंदर मूर्तियाँ बनाकर रखी गई हैं। आरंभ में चोल मूर्ति कला पल्लव शैली से प्रभावित थी। किंतु दसवीं सदी से इसमें अंतर दिखाई देता है। देवी-देवताओं की मूर्तियाँ इतनी विशाल एवं भव्य हैं कि वे सजीव प्रतीत होती हैं। इन देवी-देवताओं में अधिक मूर्तियाँ भगवान शिव की हैं। यहाँ से प्राप्त नटराज (शिव) की काँसे की मूर्तियाँ इस काल की सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। श्रवण बेलगोला स्थित जैन संत गोमतेश्वर की विशाल काँस्य की प्रतिमा को देखकर व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाता है। इनके अतिरिक्त इस काल में ऐतिहासिक पुरुषों, नारियों, ब्रह्मा, विष्णु, राम-सीता, कृष्ण, प्रकृति से संबंधित पशु-पक्षियों आदि की भी अनेक मूर्तियाँ बनाई गई हैं। इन मूर्तियों की कला को देखकर व्यक्ति मंत्र मुग्ध हो जाता है।

2. चालुक्य मूर्तिकला (Chalukya Sculpture)—चोल शासकों के समय मूर्तिकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। चालुक्य शासकों ने बादामी एवं ऐहोल में अनेक विशालकाय व भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया था। इन मंदिरों में बड़ी संख्या में विभिन्न देवी-देवताओं की विशाल एवं सुंदर मूर्तियों को रखा गया है। इन मंदिरों की दीवारों एवं छतों को भी मूर्तियों द्वारा सजाया गया है। इन मूर्तियों द्वारा पौराणिक कथाओं को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इन मूर्तियों में वराह मूर्ति एवं नटराज की मूर्ति अति उच्चकोटि की है। इन मूर्तियों के अतिरिक्त महिषासुरमर्दिनी, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर, गजलक्ष्मी, पार्वती, मनुष्य, काल्पनिक पशु, गंधर्वों आदि मूर्तियों का निर्माण भी किया गया है। संगमेश्वर मंदिर से प्राप्त विष्णु एवं शिव की मूर्तियाँ एवं विरुपाक्ष मंदिर से प्राप्त शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु की मूर्तियाँ अत्यंत सुंदर व कलात्मक ढंग से बनाई गई हैं।

3. राष्ट्रकूट मूर्तिकला (Rashtrakuta Sculpture)—राष्ट्रकूट काल मूर्तिकला के क्षेत्र में हुए अद्वितीय प्रगति के लिए भी जाना जाता है। राष्ट्रकूट मूर्तिकला गुप्त एवं चालुक्य शैली से प्रेरित है। इस काल के मूर्तिकारों ने ऐलोरा तथा ऐलीफैंटा में अनेक भव्य मूर्तियों का निर्माण किया। इस काल में जिन मूर्तियों का निर्माण किया गया उनमें विष्णु तथा शिव की मूर्तियाँ अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। इस काल में बनाई गई पार्वती की मूर्तियाँ भी काफ़ी कलात्मक हैं। ऐलोरा के कैलाश मंदिर में रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाते हुए का दृश्य अंकित किया गया है। इस मूर्ति में पार्वती भयभीत होकर शिवजी के शक्तिशाली भुजदंड का आश्रय ले रही हैं, किंतु भगवान् शिव अत्यंत दृढ़तापूर्वक बैठे हुए अपने चरण से कैलाश को दबाते हुए दिखाए गए हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ बनी नरसिंहावता

मूर्ति, भैरव की मूर्ति और इंद्र-इंद्राणी की मूर्ति अपनी कला के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ बनी लक्ष्मी, दुर्गा त
षामर्दिनी नामक मूर्तियाँ भी काफ़ी भव्य तथा कलात्मक हैं। एलीफेंटा में जिन मूर्तियों का निर्माण किया ग
में शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, गणेश, स्कंद तथा भगवान् बुद्ध आदि की मूर्तियाँ काफ़ी सुंदर एवं कलात्मक है

4. पल्लव मूर्तिकला (Palava Sculpture)—पल्लव शासक महान् कलाप्रेमी थे। इन शासकों में से म
न, नरसिंह प्रथम, नरसिंह वर्मन द्वितीय, राजसिंह एवं अपराजित वर्मन के शासनकालों में काँची, महाबलीप
द्रबाड़ी, तिरूचिरापल्ली दलवानूर आदि स्थानों में अनेक भव्य व विशाल मंदिरों का निर्माण किया गया है।
रों एवं मंदिरों की दीवारों को अनेक मूर्तियों से सजाया गया है। इन मूर्तियों में भगीरथ तपस्या के दृश्य की
धिक प्रसिद्ध है। इस मूर्ति को 98 फीट एवं 43 फीट चौड़ी चट्टान को काटकर बनाया गया है। इस मू
को अपनी तपस्या के बल पर पृथ्वी पर लाने का भगीरथ का दृढ़ विश्वास दिखाई देता है। इस दृश्य में अ
-देवता, प्राणी एवं पशु भी तपस्या में लीन दिखाए गए हैं। इसमें विशालकाय हाथियों को भी दिखाया गय
क अतिरिक्त पल्लव मूर्तिकारों ने विष्णु, महिषासुरमर्दिनी, पार्वती, हरिहर, ब्रह्मा, स्कंद, दुर्गा आदि की मू
ई गई हैं। ये मूर्तियाँ देखने में बड़ी सजीव लगती हैं।

5. पाल मूर्तिकला (Pala Sculpture)—आरंभिक मध्य काल में पाल शासकों का बंगाल एवं बिह
क था। पाल शासक न केवल महान् विजेता थे अपितु उन्हें कला से भी विशेष प्यार थे। क्योंकि पाल श
धर्म में विश्वास रखते थे इसलिए उनके शासनकाल में बौद्ध धर्म से संबंधित अनेकों भव्य व सुंदर मूर्ति
ण किया गया। इन मूर्तियों में महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। ये मूर्तियाँ काले पत्थ
की बनी हुई हैं। इस काल में बनी पद्मपाणि अवलोकितेश्वर बुद्ध की काँस्य की मूर्ति सर्वाधिक प्रसि
मूर्ति नालंदा से प्राप्त हुई थी। आजकल इसे कलकत्ता संग्रहालय में रखा गया है। इस प्रतिमा की
देखकर व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाता है। पाल शासनकाल में बौद्ध मूर्तियों के साथ-साथ शिव,
अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण भी किया गया है। पाल मूर्तिकला पर गुप्त मूर्तिकला का
दिखाई देता है।

6. चंदेल मूर्तिकला (Chandela Sculpture)—10वीं-11वीं में चंदेल शासकों ने मध्य प्रदेश के बुं
ासन किया। इस शासकों ने खजुराहो में अनेकों सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया। मंदिरों में कंदरिया
र, पार्श्वनाथ मंदिर, विश्वनाथ मंदिर एवं लक्ष्मण मंदिर सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं। चंदेल शासकों ने इन
था इनकी दीवारों पर अनेक प्रकार की मूर्तियों का निर्माण करवाया है। इन मंदिरों में बनाई गई मूर्तियों
मूर्ति, नंदी की मूर्ति, दर्पण में मुख देखते हुए स्त्री की मूर्ति, शिशु से दुलार करते हुए माता की मूर्ति, बा
नृत्य करते हुए की मूर्ति, चंदेल शासकों के युद्ध करते हुए की मूर्ति, घुड़सवारों की मूर्ति तथा अने
-देवताओं की मूर्तियाँ इन मंदिरों की शोभा को बढ़ाती हैं। इन मूर्तियों की कला देखते ही बनती है। इ
नी हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ श्रृंगार प्रधान दृश्य पेश करती हैं। कुछ मंदिरों में जैन तीर्थंकरों की
प्राप्त हुई हैं। किंतु ये मूर्तियाँ अधिक प्रभावशाली नहीं हैं।